दैनिक जागरण

विचार कर्म का आधार है

फिर सिर उठाते आतंकी

कश्मीर में अनंतनाग के जिला उपायुक्त कार्यालय पर ग्रेनेड हमला यही बता रहा है कि तमाम सतर्कता के बावजूद आतंकियों के दुस्साहस का दमन नहीं हो सका है। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद यह दूसरा आतंकी हमला है। इस हमले में एक दर्जन से अधिक लोग घायल हुए, जिनमें तीन की हालत गंभीर है। चूंकि किसी आतंकी गुट ने इस हमले की जिम्मेदारी नहीं ली इसलिए ऐसा लगता है कि वे सुरक्षा बलों की निगाह में आने से बचना चाह रहे हैं। सच्चाई जो भी हो, उन्हें सिर उठाने का मौका नहीं दिया जाना चाहिए। वास्तव में ऐसा करके ही कश्मीर के हालात सामान्य किए जा सकते हैं। यह काम प्राथमिकता के आधार पर किया जाना चाहिए ताकि कश्मीर पर लगी पाबंदियों को जल्द हटाया जा सके। आतंकियों और उनके समर्थकों को नियंत्रित करने के साथ ही इसकी भी कोशिश होनी चाहिए कि घाटी के आम लोग अलगाववाद और आतंकवाद के खिलाफ मुखर हों। इससे ही कश्मीर को लेकर जारी दुष्प्रचार थमेगा। केंद्र सरकार को इससे परिचित होना चाहिए कि इस दुष्प्रचार को भारत के साथ-साथ बाहर के भी कुछ लोग हवा देने में लगे हुए हैं। इसके लिए वे फर्जी खबरें गढ़ने का भी काम कर रहे हैं। कश्मीर को लेकर दुष्प्रचार की एक वजह देश-दुनिया का इस तथ्य से अनभिज्ञ होना है कि अनुच्छेद 370 न केवल अस्थाई था, बल्कि उसके कुछ प्रावधानों को पहले भी शिथिल किया गया था।

वैश्विक मीडिया का एक हिस्सा इससे परिचित ही नहीं कि अनुच्छेद 370 के कुछ प्रावधान किस तरह कश्मीरी जनता के साथ भेदभाव करते थे। वह इससे भी अनजान है कि अगर कश्मीर पर संयुक्त राष्ट्र का प्रस्ताव अमल में नहीं लाया जा सका तो पाकिस्तान के कारण। निःसंदेह कश्मीर में बचे-खुचे आतंकियों पर लगाम लगाने में सफलता तभी मिलेगी जब उनके साथ-साथ उनके छिपे-खुले समर्थकों से भी सख्ती से निपटा जाएगा। यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि उनके समर्थक और संरक्षक सीमा के उस पार भी हैं। वे कश्मीर का माहौल बिगाड़ने की ताक में भी हैं। पाकिस्तान उन्हें किस तरह उकसाने में लगा हुआ है, इसका पता गुलाम कश्मीर में शुरू किए गए धरना-प्रदर्शन से चलता है। पाकिस्तान सरकार प्रायोजित कश्मीर मार्च यही इंगित कर रहा है कि इमरान खान कश्मीर के बहाने अपने कुशासन से अपनी जनता का ध्यान हटाना चाहते हैं। वह एक ओर पाकिस्तानियों को सीमा पार करने से आगाह कर रहे हैं और दूसरी ओर इसकी भी कोशिश में हैं कि कश्मीर में हालात बिगड़ें ताकि उन्हें आंसू बहाने का मौका मिले। चूंकि पाकिस्तान आसानी से नहीं सुधरने वाला इसलिए उसे कुछ और सख्त संदेश देने की जरूरत है।

कार्रवाई में हीलाहवाली

उत्तराखंड में विश्वविद्यालयों पर उच्च और तकनीकी शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने की अहम जिम्मेदारी है। इसे ध्यान में रखकर ही सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों को खोलने में खासी दरियादिली दिखाई गई। बावजूद इसके शिक्षा की गुणवत्ता का सवाल अनुत्तरित है। आश्चर्यजनक यह है कि सरकारी विश्वविद्यालयों का इस मामले में प्रदर्शन ज्यादा खराब है। शैक्षिक प्रशासन को चुस्त-दुरुस्त कर अपने परिसरों और संबद्ध कॉलेजों में पठन-पाठन को बेहतर बनाने, नई पहल और शोध कार्यों को प्रोत्साहित करने में विश्वविद्यालयों की उदासीनता राज्य में उच्च व तकनीकी शिक्षा की स्थिति को काफी हद तक बयां कर जाती है। तकनीकी विश्वविद्यालय तो बदहाली का बड़ा उदाहरण ही बन गया है। विश्वविद्यालय में तमाम नियुक्तियों, संविदा और अस्थायी व्यवस्था पर रखे गए कार्मिकों को अहम और गोपनीय कार्यों को सौंपने के मामलों को लेकर तो अंगुली उठ ही रही थी, पीएचडी उपाधि में भी धांधली सामने आने के बाद विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा को बड़ा धक्का लगा है। यही नहीं सरकार की ओर से कराए गए स्पेशल ऑडिट में बड़े पैमाने पर वित्तीय गड़बड़ी का खुलासा भी हो चुका है। विश्वविद्यालय की इस बदहाली ने राजभवन और शासन दोनों को ही सख्त रुख अपनाने को मजबूर किया। लिहाजा राज्यपाल की ओर से विश्वविद्यालय को कार्यप्रणाली में सुधार लाने की सख्त हिदायत के साथ दोषियों पर कार्रवाई के निर्देश दिए गए। शासन ने भी गड़बड़ियों के मामले को कार्य परिषद में रखकर दोषियों पर कार्रवाई के निर्देश विश्वविद्यालय को दिए थे। उक्त दोनों ही आदेशों की नाफरमानी का अंदाजा इससे लग सकता है कि डेढ़ माह पहले शासन के निर्देशों का अब तक पालन नहीं हो सका है। इस वजह से ही राजभवन को कड़ा रुख अपनाने को मजबूर होना पड़ा है। लंबे अरसे तक विश्वविद्यालय में जिस तरह कामचलाऊ तरीके से व्यवस्था संचालित हुई है, उसका नतीजा शोध उपाधि की विश्वसनीयता और तमाम तरह की गड़बड़ियों के रूप में सामने है। ऐसे में दोषियों पर कार्रवाई लाजिमी है। इस मामले में विश्वविद्यालय प्रशासन ढुलमुल बना हुआ है, उससे सरकारी तंत्र भी कटघरे में है। तकनीकी शिक्षा को लेकर राज्य की छवि पर भी बुरा असर पड़ा है। सरकार को तकनीकी विश्वविद्यालय की कार्यप्रणाली में सुधार को लेकर गंभीर और सतर्क रहने की जरूरत है।

बिगड़ते पर्यावरण को बचाने की चुनौती

संजय गुप्त

हम सबको इसे लेकर चेतना ही होगा कि जलवायु परिवर्तन के विनाशकारी असर ने भारत की दहलीज पर दस्तक दे दी है

अवधेश राजपूत

पटना में आई भीषण बाढ़ ने जहां शहरी आधारभूत ढांचे की पोल खोल दी वहीं यह भी साफ कर दिया कि तेजी से बिगड़ता पर्यावरण गंभीर समस्याएं पैदा कर रहा है। जब बारिश और बाढ़ से पटना के साथ पूर्वी उत्तर प्रदेश के कई इलाकों में जलप्रलय की स्थिति है तब देश के कुछ हिस्सों में सूखे जैसे हालात हैं। पिछले एक दशक में देश-दुनिया में तमाम स्थानों पर जरूरत से ज्यादा बारिश के कारण जान-माल की व्यापक क्षति हुई है। इसी दौरान यूरोपीय देशों में गर्मी के रिकॉर्ड भी टूटे हैं। पिछले वर्ष केरल में बारिश से हुई तबाही को हम भूल नहीं सकते। वहां अगस्त के शुरुआती 19 दिनों में ही 758.6 मिलीमीटर बारिश हुई जो सामान्य से 164 फीसद अधिक थी। इसके चलते जो बाढ़ आई उसमें तीन सौ से अधिक लोगों की जान गई। जलवायु परिवर्तन के कारण वायुमंडल लगातार गर्म हो रहा है और इसके चलते अंटार्कटिका के साथ ग्रीनलैंड में मौजूद बर्फ की चादर तेजी से पिघल रही है। अनुमान है कि 2050 तक अधिकांश ग्लेशियर खत्म हो जाएंगे। इनमें हिमालयी ग्लेशियर भी शामिल हैं। यह भारत के लिए एक बड़ी विपदा का संकेत है। हमें इसे लेकर चेतना ही होगा कि जलवायु परिवर्तन के विनाशकारी असर ने भारत की दहलीज पर दस्तक दे दी है। दुखद यह है कि अब भी हमारे कार्य व्यवहार पर यथास्थितिवाद हावी दिख रहा है। जलवायु परिवर्तन के मुख्य कारक प्रदूषण के मुद्दे पर नीति निर्माताओं ने गंभीरता तो दिखाई, पर अभी उसके अपेक्षित नतीजे नहीं दिखे हैं। इसका कारण समाज में जागरूकता की कमी है। यदि प्राकृतिक संपदा और पर्यावरण संरक्षण के प्रति हमारी उदासीनता दूर नहीं हुई तो भविष्य भयावह हो सकता है। चूंकि आजकल जोर लोकलुभावन नीतियों पर है इसलिए पर्यावरण की दशा सुधारने के लिए सख्त फैसले नहीं लिए जा रहे हैं।

पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में फसलीय अवशेष यानी पराली जलाए जाने से सर्दियों के मौसम में वायुमंडल बुरी तरह प्रदूषित हो जाता है। सब इससे परिचित हैं कि पराली जलने से बड़ी मात्रा में कार्बन डाईऑक्साइड के साथ अन्य विषैले गैसों का उत्सर्जन होता है, लेकिन उस पर रोक नहीं लग पा रही है। पराली जलाने की समस्या आज की नहीं, दशकों पुरानी है। राजनीतिक कारणों से न तो हरियाणा सरकार ने किसानों को पराली जलाने से रोकने के लिए जरूरी कदम उठाना जरूरी समझा और न ही पंजाब सरकार ने। वे शुतुरमुर्गी रवैया अपनाए रहीं। जब इसके खिलाफ राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के लोग सक्रिय हुए और मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा तो सरकारों की कुंभकर्णी नींद टूटी। यदि समय रहते किसानों को पराली जलने से होने वाले खतरों से अवगत कराया जाता और आम जनता को उन सभी कारणों से परिचित कराया जाता जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते हैं तो बेहतर होता।

हम इसकी अनदेखी नहीं कर सकते कि जलवायु परिवर्तन के कारण आदिकाल से जीवनदायिनी रहीं हमारी नदियां आज दम तोड़ने की कगार पर हैं। तमाम नदियां अब नष्टप्रायः हैं। हिमालय क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन की वजह से गंगा और यमुना की सहायक जलधाराएं तेजी से सूख रही हैं। इसके लिए आम लोग भी दोषी हैं। हम जहां नदियों की पूजा करते हैं वहीं उन्हें प्रदूषित करने से भी बाज नहीं आते। आखिर प्रतिमाओं के विसर्जन के समय यह ख्याल क्यों नहीं आता कि उनमें इस्तेमाल होने वाले रसायन और अन्य हानिकारक पदार्थ नदियों को जहरीला बनाते हैं? मुश्किल यह है कि शासन-प्रशासन धार्मिक आस्था के चलते प्रतिमाओं के विसर्जन के खिलाफ कोई कदम उठाने का साहस नहीं करता। यह अच्छा हुआ कि एनजीटी ने गंगा और उसकी सहायक नदियों में प्रतिमाओं के विसर्जन पर रोक लगा दी, लेकिन देखना है कि प्रशासन उस पर अमल करा पाता है या नहीं?

पर्यावरण संबंधी चिंताओं के बीच केंद्र सरकार ने एक बार इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाने का फैसला किया है। प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त को ही लाल किले की प्राचीर से इसके खिलाफ मुहिम चलाने की घोषणा की थी। संयुक्त राष्ट्र के मंच से भी उन्होंने दुनिया को इस अभियान के बारे में बताते हुए कहा कि जलवायु परिवर्तन रोकने के मामले में बातें करने का समय निकल चुका है, अब काम करके दिखाने का समय है। प्लास्टिक से होने वाले नुकसान को देखते हुए देर से सही, एक दुरुस्त फैसला लिया गया। केंद्र सरकार ने आम आदमी के रोजगार को ध्यान में रखते हुए प्लास्टिक पर प्रतिबंध जैसा कदम नहीं उठाया है। चूंकि प्लास्टिक की वस्तुओं का निर्माण छोटे-छोटे उद्योग करते हैं इसलिए उनके निर्माण पर यकायक पाबंदी लगती तो लाखों लोगों को बेरोजगारी का सामना करना पड़ता। राज्य सरकारों को यह समझना चाहिए कि सिंगल यूज प्लास्टिक के चलन को रोकने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण होगी। क्षरणशील न होने के कारण प्लास्टिक सैकड़ों साल ज्यों का त्यों बना रहता है। इससे पानी भी दूषित होता है और मिट्टी भी। प्लास्टिक अवशेष नदियों के जरिये समुद्र तक पहुंचते हैं और उनमें मौजूद जैव विविधता को बर्बाद करते हैं। जिस माइक्रो प्लास्टिक में पेय पदार्थों या खाद्य सामग्री की पैकिंग होती है वह भी सेहत के लिए हानिकारक है। यदि हम जागरूक होकर सिंगल यूज प्लास्टिक का इस्तेमाल बंद कर सकें तो हर साल नदियों, नालों और जमीन में जमा होने वाले लाखों टन प्लास्टिक कचरे से निजात मिल सकती है। स्पष्ट है कि इससे पर्यावरण सुधारने में मदद मिलेगी।

भारत पेरिस जलवायु समझौते में शामिल है। यह जलवायु परिवर्तन रोकने की वैश्विक पहल है। यह तभी प्रभावी होगी जब सभी देश मिलकर काम करेंगे। चिंताजनक यह है कि कई ऐसे विकसित देश अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाने को तैयार नहीं जो कहीं अधिक कार्बन उत्सर्जन करते हैं। जलवायु परिवर्तन रोकने के लिए 2015 में हुए पेरिस समझौते को अपने लिए अनुचित बताते हुए अमेरिका इससे बाहर हो गया। इसके तहत विकसित देशों को कार्बन उत्सर्जन कम करने के साथ विकासशील देशों को तकनीकी एवं आर्थिक सहायता उपलब्ध करानी थी ताकि वे अपना विकास रोके बगैर जलवायु परिवर्तन के खतरे को कम करने में सहायक बन सकें। अमेरिका के इस समझौते से बाहर हो जाने के कारण पेरिस में जो लक्ष्य तय किए गए थे उन्हें हासिल करना मुश्किल हो रहा है। चूंकि भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पेरिस समझौते पर अमल के लिए प्रतिबद्ध हैं इसलिए दुनिया भर में उनकी सराहना हो रही है। उन्होंने सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ जिस जन आंदोलन छेड़ने की बात कही उसमें समाज के हर तबके को शामिल होने की जरूरत है। वास्तव में यह बुनियादी बात सभी को समझनी ही होगी कि पर्यावरण संरक्षण केवल शासन-प्रशासन का काम नहीं, इसमें तो हर व्यक्ति का योगदान चाहिए। बेहतर होगा कि इस मामले में आम आदमी से लेकर उद्योगपति तक अपने महती दायित्व को समझें।

response@jagran.com

काम न करने के कारगर नुस्खे

हास्य-व्यंग्य

सूर्यकुमार पांडेय

अपने कार्यस्थल पर सदा ही टेंशनित रहने वालों के लाभार्थ एक गोपनीय विद्या का खुलासा

यदि किसी कर्मचारी के सिर पर उसके बॉस ने वरदहस्त रखा हुआ हो तो उसे अपनी जॉब को लेकर फालतू की टेंशन नहीं पालनी पड़ती और कोई काम भी नहीं करना पड़ता। मुझे अपने एक मित्र के श्रीमुख से जब यह अलौकिक ज्ञान सुनने को मिला तो मैंने पलटकर प्रश्न किया, 'यार, मुझको भी अपने बॉस को पटाने की तरकीब बताओ। मेरा बॉस तो हमेशा ही मुझसे चिढ़ा रहता है।' मित्र ने पूछा, तुम्हारा बॉस महिला है या पुरुष!'

मैंने प्रतिप्रश्न किया, 'क्या दोनों को प्रसन्न करने के अलग-अलग फार्मूले हैं?' वह बोला, 'भाई, इस मामले में जेंडर इक्वेलिटी नहीं चलती।' मैंने कहा, 'वैसे मेरा बॉस पुरुष है। वह अपनी नाक पर मक्खी भी नहीं बैठने देता। समझ लो, टफ किस्म का केस है।' मित्र अपनी जुबान से अतिशय आत्मविश्वास की चाशनी टपकाता हुआ बोला, 'कितना भी टफ हो, आखिर है तो इंसान ही। मैं अपने बीस साल के सेवाकाल में एक से बढ़कर एक खूसट बॉसेज को पटाने का तजुर्बा रखता हूं। तुम भी अगर मेरे कहे अनुसार चलोगे तो सदा सुखी रहोगे और कितना भी काम हो, तुम्हें काम नहीं करना पड़ेगा।'

मैं भी अपने संकोच की पोटली का मुंह खोलते हुए उससे बोला, 'दोस्त, कहीं मेरा दांव उलटा पड़ गया तो अपनी नौकरी से भी हाथ धो बैठूंगा। तुम तो जानते ही हो, मुझे ये सारे दंद-फंद बिल्कुल नहीं आते।'

मेरा मित्र ठहाके लगाता हुआ कहने लगा, 'हिम्मत क्यों हारते हो? मैं तुम्हें कुछ सूत्र बताऊंगा। मेरे पास सिद्ध फार्मूला है। तुम भी कल से ही उनके अनुसार चलना शुरू कर दो। अगर मेरे सिखाए हुए सूत्र कारगर साबित नहीं हो पाए तो मैं अपनी मूंछें मुंडवा लूंगा।' मैंने उसके चेहरे को गौर से देखा। मूंछ क्या, मूंछ का एक बाल तक नहीं था। फिर भी उस रोज मेरे उस मित्र ने जो तत्वज्ञान दिया था, उन पर अमल करने के बाद मैं आज परम सुखी प्राणी हूं। जो नौकरी मुझे काटने दौड़ती थी, अब मुझे उसमें रस आने लगा है। अपने कार्यस्थल पर सदा टेंशनित रहने वालों के लाभार्थ मैं इस गोपनीय विद्या का खुलासा कर रहा हूं। इसे स्वयं तो अपनाएं हीं, औरें के बीच भी इसका प्रचार-प्रसार करते रहिए। लोगों के लाभार्थ मैं बॉस वशीकरण मंत्र के सूत्र पेश कर रहा हूं।

अपने बॉस से कलीग्स की चुगली करने का कोई भी अवसर हाथ से न जाने दें। अगर आपका निजी मकान हो तो उसको किराये पर उठाकर अपने बॉस के मोहल्ले में किराये का मकान ले लें। इस तरह सामीप्य का लाभ उठाइए। आप अपने बॉस के दरवाजे पर बिना नागा किए पहुंचिए। सुबह-शाम का एक चक्कर आपको ऑफिस की चकरघिन्नी से मुक्ति दिलाने में सहयोगी बन जाएगा। आप यह भी पता कीजिए कि आपके बॉस के मॉर्निंग वॉक का क्या टाइम है? आप भी उसी समय उठिए और टहला कीजिए। हर दिन प्रातः नमस्कार आपकी सेवा को सुखमय बनाए रखने में सहायक होगा। बॉस के घरेलू नौकरों से दोस्ती गांठिए। इससे आप उसके घर में घुसपैठ का सहज मार्ग पा सकते हैं। अगर आपने एक बार बॉस के घर में घुसपैठ कर ली तो सफलता अवश्यंभावी है। आपको जब भी शॉर्टलीव लेने का मन हो, अपने बॉस से विनम्रतापूर्वक रेलवे रिजर्वेशन कराने, बच्चों की फीस भरवाने या बैंक-पोस्ट ऑफिस का कोई काम पूछिए और कहिए कि सर, उधर ही जा रहा हूं, करता आऊंगा। इस तरह बॉस के एक-दो काम हाथ में ले लीजिए, फिर चाहे पूरे दिन अपने दफ्तर से फरार रहिए।

आपके बॉस के घर पर कब कोई बर्थडे पार्टी है या फिर पूजा-पाठ या शादी-ब्याह का कार्यक्रम है, इसकी पुख्ता जानकारी भी जुटाते रहिए। उचित मौके पर बिना बुलाए ही पहुंच जाइए। फिर खीसे निपोरते हुए कहिए- सर लगता है, मैं गलत टाइम पर आ गया हूं। फिर बिना कहे ही काम में हाथ बटाने लग जाइए। इस तरह आप अपने बॉस के चहेते बन जाएंगे। बॉस के ऑफिसेत्तर शौकों पर बराबर नजर बनाए रखना भी आपके लिए लाभदायक हो सकता है। आप उनके शौक की पूर्ति में तन-मन-धन से जुट जाइए। फिर देखिएगा कि कौन ऐसा बॉस है, जो स्वयं आपके वश में नहीं हो जाता है?

मैंने मित्र की सलाह मानी और उस पर अमल कर ऑफिस में काम न करने का सुख उठा रहा हूं। आप भी इसे आजमाइए और काम न करते हुए काम करिए।

response@jagran.com

ऊर्जा

प्रेरणा

'प्रेरणा' शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है। जीवन के प्रत्येक मोड़ पर हम सकारात्मक या नकारात्मक रूप से किसी न किसी से प्रेरित रहते हैं और हमारे कार्य, उद्देश्य और संकल्प आदि तमाम प्रकार के व्यावहारिक गुण भी इसी से निर्धारित होते हैं। प्रत्येक मानवीय व्यवहार सिर्फ फायदे या नुकसान से निर्धारित-संचालित होते है। अगर व्यक्ति को नुकसान के बदले फायदा अधिक नजर आता है तो वह उसके लिए प्रेरणा का जरिया बन जाता हैं। प्रेरणा दो प्रकार से व्यक्ति को प्रभावित करती है। एक बाहरी प्रेरणा और दूसरी आंतरिक प्रेरणा। बाहरी प्रेरणा के स्वरूप को देखें तो इसमें स्थायित्व नहीं होता, बल्कि ये क्षणिक होती है जिसका बिखरना तय है। यह केवल और केवल प्रेरक पर निर्भर करती है। जब तक प्रेरक विद्यमान है तब तक ही बाहरी प्रेरणा व्यक्ति को प्रेरित करती है। बाहरी प्रेरणा बहुधा हमारे भीतर मानसिक दबाव और तनाव आदि भी पैदा कर देती है जिससे हीनभावना उत्पन्न हो जाती है।

परिणामस्वरूप कार्यक्षमता एवं रचनात्मकता में गिरावट आने लगती है। वही अंदरूनी प्रेरणा व्यक्ति के भीतर दो कारणों से उत्पन्न होती है। एक अपनी स्वीकार्यता को बढ़ाने और दूसरा जिम्मेदारियों के निर्वहन का दायित्व समझने पर। जिम्मेदारियां व्यक्ति को अपने लक्ष्य और संकल्प को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और यह सर्वविदित है कि जिम्मेदारियों की कमी प्रेरणा को भी छीन लेती है। इससे व्यक्ति के भीतर नकारात्मक प्रेरणा का संचार होने लगता है। यानी आंतरिक प्रेरणा व्यक्ति में हमेशा बनी रहती है और यह मनुष्य की आत्मा से निकलकर सकारात्मकता का संचार करते हुए मनुष्य को धैर्यवान एवं संकल्पित बनाती है। सही अर्थों में यही सच्ची प्रेरणा हैं। प्रेरणा से कार्यक्षमता के साथ ही सोच में भी बदलाव आता है। इससे उद्देश्य प्राप्ति के लिए यह अकर्मण्यता और आलस्य को दूर कर दृढ़-निश्चयी बनाता है। इसलिए हमें अपने भीतर आंतरिक प्रेरणा उत्पन्न करने के साथ-साथ नकारात्मक प्रेरणा को दूर करना चाहिए।

शिवांशु राय

तथ्य-कथ्य | धूमपान करने वालों में ई-सिगरेट के उपभोक्ता

स्रोत : स्टेटिस्टा ग्लोबल कंज्यूमर सर्वे

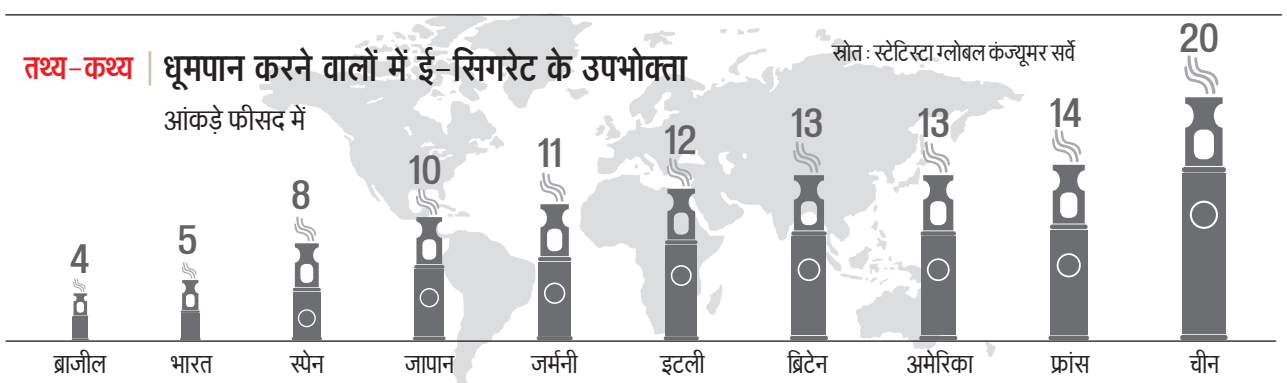

निजता में सेंध लगाती तकनीक

मुकुल व्यास

स्मार्टफोन ऑडियो विश्लेषण वाली एआई तकनीक तमाम जानकारियां जुटा सकती है जो निजता के लिए बड़ा खतरा है

आज अधिकांश लोगों के पास स्मार्टफोन है, लेकिन इससे जुड़े प्राइवेसी यानी निजता के मामलों के बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी होगी। स्मार्टफोन हमारे मूवमेंट पर नजर रख सकता है। अब लोगों को यह चिंता हो गई है कि उनका स्मार्टफोन उनकी हर बात को सुन रहा है। अभी इसका कोई सबूत नहीं मिला है, लेकिन उनकी चिंता निराधार नहीं है। दुनिया भर के शोधकर्ता ऑडियो का विश्लेषण करने वाले नए किस्म के शक्तिशाली एआइ कंप्यूटर प्रोग्राम विकसित कर रहे हैं जो सिर्फ ध्वनि से बहुत कुछ सूचनाएं निकाल सकते हैं।

यह नई टेक्नोलॉजी प्राइवेसी के लिए एक बड़ा खतरा बन सकती है, क्योंकि इसकी उपस्थिति चौबीसों घंटे रहेगी। आवाज सुनने वाली एआइ लोगों द्वारा बोले जाने वाले प्रत्येक शब्द का विश्लेषण करने के बजाय उनकी ध्वनि से ही बहुत सी व्यक्तिगत सूचनाएं प्राप्त कर सकती है। इनमें आपकी लोकेशन से लेकर भाषा जैसी जानकारियां शामिल हैं। हैरानी की बात यह है कि ये सारी सूचनाएं आपके बोलने से निकलने वाली आवाज से ही प्राप्त की जा सकती हैं। इतना ही नहीं, ऑडियो एआइ सिस्टम यह भी पता लगा सकता है कि कहीं आप झूठ तो नहीं बोल रहे। यह आपके स्वास्थ्य और फिटनेस का विश्लेषण कर सकता है। आपकी मौजूदा भावनात्मक दशा को जान सकता है और यह भी पता लगा सकता है कि आप नशे में हैं या नहीं। कुछ ऐसे सिस्टम भी हैं जो पता लगा सकते हैं कि खाते वक्त फोन पर बोलते हुए आप वास्तव में कौन सी चीज खा रहे थे। कुछ शोधकर्ता ऐसे सिस्टम विकसित करने की कोशिश कर रह रहे हैं जो ध्वनि के विश्लेषण से रोगों का निदान कर सकेंगे।

कुछ ऐसे सिस्टम भी हैं जो बातचीत में वक्ता के एटीट्यूड का पता लगा सकते हैं और वक्ताओं के बीच टकराव का पता लगा सकते हैं। पिछले वर्ष विकसित किया गया एक एआइ सिस्टम किसी दंपती के बीच आपसी बातचीत के लहजे को सुनकर यह बता सकता है कि भविष्य में उनकी कितनी पटेगी। ये सब दुनिया की प्रयोगशालाओं में विकसित की जा रही एआइ टेक्नोलॉजी के कुछ उदाहरण हैं।

ये सारे सिस्टम एआइ का प्रयोग करते हैं। इसके लिए एक कंप्यूटर प्रोग्राम को बहुत सारे डाटा के साथ प्रशिक्षित किया जाता है। प्रत्येक डाटा के साथ यह लेवलिंग की जाती है कि उसमें कौन सी सूचना दर्ज है। हजारों या लाखों रिकॉर्डिंग का विश्लेषण यह प्रोग्राम पता लगाने लगता है कि डाटा की कौन सी चीज किस लेवल के साथ जुड़ी है। यह डाटा मुख्य रूप से ध्वनि में होने वाले सूक्ष्म उतार-चढ़ाव के बारे में होता है। मसलन, आपके जेंडर का पता लगाने वाला सिस्टम आपके स्मार्टफोन से आने वाली स्पीच को रिकॉर्ड करेगा और उसकी प्रोसेसिंग करके उसके 'फीचर' निकालेगा। स्पीच के फीचर में होने वाला उतार-चढ़ाव पुरुष और महिला की आवाज में कुछ भिन्न होगा। एआइ सिस्टम न सिर्फ इन फीचर को देखेगा, बल्कि यह भी देखेगा कि ये फीचर कितनी बार और किस तरह बदलते हैं। रिकॉर्डिंग स्मार्टफोन में ही होती है और फिर विश्लेषण होता है।

(लेखक विज्ञान मामलों के जानकार हैं)

ताकत बनी कमजोरी

राजरंग

राजनीति के बदले दौर में नेताओं के बोल का नफा-नुकसान पार्टियों के लिए बेहद महत्वपूर्ण हो गया है। शायद इसी वजह से अपने भाषणों से हलचल मचाने वाले स्टार नेताओं को भी पार्टियां चुनाव प्रचार में उतारने को लेकर कुछ ज्यादा ही सतर्क हो गई हैं। कांग्रेस के सुपरस्टार प्रचारक नवजोत सिंह सिद्धू का हरियाणा चुनाव में स्टार प्रचारकों की सूची से गायब होना इसका ताजा नमूना है। सिद्धू पार्टी के उन चंद नेताओं में शामिल हैं जिनका भाषण सुनने के लिए न केवल भीड़ जुटती है, बल्कि उनके बोल सियासी हलचल भी पैदा करते हैं। मगर हरियाणा में यही बात उनके खिलाफ जा रही है और तभी स्टार प्रचारकों की सूची में उनका नाम शामिल नहीं किया गया है। दरअसल हरियाणा में कांग्रेस के बड़े नेताओं के साथ उम्मीदवारों ने भी सिद्धू को प्रचार के लिए न भेजने का संदेश हाईकमान को पहले ही भेज दिया। इनका तर्क था कि सिद्धू अपने भाषण के अंदाज से लोगों को लुभाते तो हैं, मगर इस दरम्यान कई बार उनके बोल विवादों का नया पिटारा खोल देते हैं। लोकसभा चुनाव के दौरान कटिहार में उनके एक ऐसे ही बोल को तारिक अनवर की हार का एक बड़ा कारण माना जाता है। हरियाणा में कांग्रेस पहले ही अपनी अंदरूनी चुनौती से जूझ रही है और ऐसे में सूबे के नेता सिद्धू के संभावित बोल की सिरदर्दी उठाने का जोखिम नहीं लेना चाहते थे। जाहिर है कि पंजाब की सियासत में किनारे हुए सिद्धू को फिलहाल पड़ोसी हरियाणा के चुनाव में भी चुप ही रहना पड़ेगा।

चप्पे-चप्पे पर नजर

पूरे देश की आंतरिक सुरक्षा की जिम्मेदारी संभाल रहे गृह मंत्रालय की नजर अब नॉर्थ ब्लॉक के भीतर भी चप्पे-चप्पे पर होगी। वैसे तो नॉर्थ ब्लॉक स्थित गृह मंत्रालय में आने-जाने वालों की सुरक्षा जांच पहले भी काफी मुस्तैदी से की जाती थी, लेकिन एक बार बिल्डिंग में घुस जाने के बाद कौन कहां जा रहा है, यह जानना संभव नहीं था। जाहिर है कि कई आगंतुक किसी एक अधिकारी के नाम पर पास बनवाकर कई अधिकारियों के कमरे में घूमते नजर आते थे, लेकिन अब यह संभव नहीं हो सकेगा। गृह मंत्रालय के सभी गलियारों में अब कैमरे लगाए जा रहे हैं। इन कैमरों के माध्यम से गलियारों में घूमने वाले हर एक शख्स पर नजर रखी जा सकेगी। इससे गृह मंत्रालय के भीतर बिना वजह घूमने वाले अपने अधिकारियों पर नजर रखना भी आसान होगा। यानी अपने कामकाजी समय में बेवजह खाली घूमना गृह मंत्रालय के अधिकारियों पर भी गाज गिरा सकता है।

नार्वे का सवाल

वैसे तो विदेश मंत्री एस जयशंकर की छवि बेहद गंभीर कूटनीति की है, लेकिन उनके साथ काम करने वाले करीबी लोग उनके मजाकिया और हल्के-फुल्के चुटीले अंदाज को भी बखूबी जानते हैं। पिछले दिनों वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के कार्यक्रम में उनका यह अंदाज खुलकर सामने आया। मौका था जब फोरम के प्रेसिडेंट बोर्ग ब्रेंदे जयशंकर का लाइव साक्षात्कार कर रहे थे। ब्रेंदे नार्वे के पूर्व विदेश मंत्री हैं। साक्षात्कार के दौरान उन्होंने जयशंकर से पूछा कि क्या भारत एक उभरती हुई शक्ति के तौर पर अपने पड़ोसी देशों के बीच उत्पन्न हो रही समस्याओं को सुलझाने के लिए मध्यस्थता करेगा? जयशंकर का जवाब था, यह बहुत ही 'नार्वेआई' सवाल है। उनके इस जवाब पर पूरा हाल ठहाकों से गूंज उठा और ब्रेंदे भी थोड़ी देर के लिए असहज हो गए। असल में जयशंकर ने बहुत ही सहज भाव से श्रीलंका में तमिल समस्या के दौरान नार्वे की भूमिका और उसकी तरफ से की जा रही मध्यस्थता की कोशिशों की याद दिला दी थी।

अनदेखी पर रोष

बिहार में नीतीश सरकार से भाजपा कार्यकर्ताओं व स्थानीय नेताओं की नाराजगी अब मुखर होने लगी है। खासतौर पर पटना के कुछ इलाकों में जलभराव के बाद यह शिकायत और ज्यादा गहरी हो गई है। अभी तक केवल कार्यकर्ता और स्थानीय स्तर के नेताओं की शिकायत ही सुनने में आती थी कि नीतीश प्रशासन उनकी बात नहीं सुनता, लेकिन अब विधायक और यहां तक कि सांसदों में भी इस तरह का भाव दिखने लगा है। हाल ही में पटना शहर में भरे पानी को निकालने में राज्य सरकार की धीमी रफ्तार और भाजपा विधायकों व सांसदों के सुझावों पर अमल में देरी को लेकर इन नेताओं में सार्वजनिक तौर पर तो अपनी नाराजगी जाहिर नहीं की, लेकिन पार्टी के भीतर ऐसी सुगबुगाहट काफी जोरों से रही कि प्रशासन भाजपा नेताओं द्वारा सुझाए जा रहे उपायों को नजरअंदाज कर रहा है। रोष इतना अधिक है कि उसकी आवाज दिल्ली में भी सुनाई दे रही है। अब देखना यही होगा कि इसका असर क्या होता है।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।